

गिजु भाई का शैक्षिक चिन्तन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

डॉ० बनवारी

शोध सारांश-

गिरिजा शंकर भगवान जी बंधेका जिन्हें लोग प्रेम एवं सम्मान से गिजु भाई कहते थे, ने बाल शिक्षा के क्षेत्र में एक नए आन्दोलन के शुरुआत की। कई बिन्दुओं पर मारिया मॉन्टेसरी से प्रभावित होने के बावजूद इन्होंने अपनी शिक्षण पद्धति को भारतीय जामा पहनाया। इन्होंने प्रतिष्ठित वकालत का पेशा छोड़कर एक समर्पित शिक्षक बन गए और बालकों की वकालत करने लग गए। इनका उत्कृष्ट कार्य बालकों को स्कूल के भय पूर्ण वातावरण से मुक्त कर कराना था। शिक्षा को सर्वांगीण विकास का साधन मानने वाले गिजु भाई का शैक्षिक चिन्तन बालकों के इर्द-गिर्द ही घूमता है। शिक्षक प्रधान एवं परीक्षा प्रधान शिक्षा व्यवस्था का विरोध कर इसे अनुभवजन्य बनाया है। प्रस्तुत शोध पत्र में गिजु भाई का शैक्षिक चिन्तन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। खेल विधि एवं इन्द्रिय प्रशिक्षण पर आधारित इनकी शिक्षण विधि, स्वतन्त्रता एवं बालको से प्रेम पूर्ण व्यवहार पर आधारित अनुशासन, विद्यालय का सुन्दर एवं भय मुक्त वातावरण वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक दिखाई देता है।

मुख्य शब्द- बालकों के वकील, दिवा स्वप्न, प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षा, स्वानुशासन, बाल केन्द्रित शिक्षा, बाल देवो भव, मूछों वाली माँ, बालकों के गाँधी, ईसीसीई।

प्रस्तावना-

शिक्षा एक ओर जहाँ व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है, उसका व्यक्तिगत उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है, वहीं दूसरी ओर उसे समाज का एक महत्वपूर्ण, उत्तरदायी सदस्य एवं राष्ट्र का सुयोग्य व सजग नागरिक भी बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी भावी पीढ़ी के आदर्शों, मूल्यों, विश्वासों एवं परम्पराओं से युक्त अपनी सांस्कृतिक धरोहर को हस्तान्तरित करता रहता है। शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से निभाने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहायता प्रदान करती है। बच्चों के कुछ बड़े होते ही परिवार के सदस्यों द्वारा उसे उठने-बैठने, चलने-फिरने, खाने-पीने आदि की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं। जब बच्चा तीन-चार वर्ष की आयु का हो जाता है तब उसे पढ़ना-लिखना सिखाना प्रारम्भ कर दिया जाता है। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ कर दिया जाता है। विभिन्न शैक्षिक चिन्तकों ने शिक्षा के सम्प्रत्यय, उसके उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधियाँ, अनुशासन, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं विद्यालय आदि के सम्बन्ध में अपने-अपने विचार दिए हैं। इन्हीं चिन्तकों के बीच गिजु भाई का शैक्षिक चिन्तन शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

गिजु भाई का जन्म 15 नवंबर, 1885 को गुजरात के चित्तल गाँव में हुआ था। गिजु भाई जिनका पूरा नाम गिरिजा शंकर भगवान जी बंधेका था किन्तु लोग उनका पूरा नाम लेने की बजाय गिजु भाई कहकर बुलाते थे। गिजु भाई ने अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् वकालत करना प्रारम्भ किया। एक प्रतिष्ठित वकील होने के बाद भी उनका मन वकालत में नहीं लगा और शिक्षा के क्षेत्र में पदार्पण कर एक शिक्षक बन गए। वे ऐसे बालकों के वकील बन गए जो शिक्षा से वंचित थे या जिनके माता-पिता शिक्षा के लिए उन पर अत्याचार करते थे अथवा विद्यालय में पढ़ाई के नाम पर डाँट-फटकार एवं हिंसा के भागी थे। उन्होंने बच्चों के शिक्षा पर गम्भीरपूर्वक चिन्तन किया एवं उनके जीवन को सुखमय बनाने के लिए भागीरथी प्रयास में जुट गए।

गिजु भाई का शैक्षिक चिन्तन शिशु शिक्षा तक ही सीमित है। गिजु भाई डॉ० मारिया मॉन्टेसरी से विशेष रूप से प्रभावित थे। किन्हीं-किन्हीं बिन्दुओं पर फ्रोबेल की किंडरगार्टन प्रणाली का भी समर्थन करते थे किन्तु इन्होंने इन विकसित शिक्षण पद्धतियों को ज्यों का त्यों न अपना कर इनका भारतीय अनुकूलन किया। शिशु शिक्षा के सम्बन्ध में इनके विचार दो पुस्तकों- 'दिवा स्वप्न' एवं 'प्राथमिक शाला में भाषा शिक्षा' में मिलते हैं। दिवा स्वप्न इन्होंने कहानी विधि में लिखी है जिसमें एक शिक्षक अपनी भावी शाला का ताना-बाना बुनता दिखाई देता है जो कोई और नहीं स्वयं गिजु भाई ही हैं।

इन्होंने शिक्षक के रूप में विश्राम न करके अपने शैक्षिक विचारों को पुस्तकों के माध्यम से समाज, शिक्षकों एवं अभिभावकों तक पहुँचाते रहे। इनकी प्रमुख पुस्तकें हैं- 'दिवास्वप्न', 'मॉन्टेसरी पद्धति', 'प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षा', 'प्राथमिक विद्यालय की शिक्षा पद्धतियाँ', 'माता-पिता से', 'ऐसे हों शिक्षक', 'बाल-शिक्षण जैसा मैंने समझा', 'प्राथमिक विद्यालय में व्यावसायिक शिक्षा', 'कथा-कहानी', 'चलते-फिरते शिक्षा', 'माँ-बाप बनना कठिन है', 'माता-पिता की माथापच्ची', 'शिक्षकों से' आदि। इन्होंने अपने जीवन में लगभग 600 शिक्षकों को शिशु शिक्षण का प्रशिक्षण भी दिया। इनका सबसे बड़ा कार्य बालकों को स्कूल के भयपूर्ण वातावरण से मुक्त कराना था। इसीलिए आज इन्हें शिक्षा की दुनिया में 'बच्चों के गांधी' के नाम से भी जाना जाता है।

उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य वर्तमान समय में गिजु भाई के शैक्षिक चिन्तन की प्रासंगिकता का विस्तारपूर्वक विवेचना करना है।

गिजु भाई का शैक्षिक चिन्तन-

‘जब तक बालक घरों में मार खाते हैं, और विद्यालयों में गालियाँ खाते हैं,

तब तक मुझे चैन कैसे पड़े?

जब तक बालकों के लिए पाठशालाएँ, वाचनालय, बाग-बगीचे और क्रीडांगण न बनें,

तब तक मुझे चैन कैसे पड़े?

जब तक बालकों को प्रेम और सम्मान नहीं मिलता,

तब तक मुझे चैन कैसे पड़े?’

बालकों के लिए यह उद्गार व्यक्त करने वाले, बाल केन्द्रित शिक्षा के पक्षधर गिजु भाई के मतानुसार

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों के स्वाभाविक एवं मानसिक योग्यताओं का विकास कर सके। वास्तविक शिक्षा वही है जो मनुष्य का सर्वांगीण विकास करे। उन्होंने शिक्षा की ऐसी प्रणाली को स्वीकार किया जो बच्चों को विशेष रूप से प्रारम्भिक वर्षों में 'स्वतन्त्र' और 'प्राकृतिक' वातावरण में सीखने की स्वतन्त्रता दे।

शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास का साधन मानने वाले गिजु भाई ने बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास, सृजनात्मकता का विकास, धार्मिक और नैतिक विकास को शिक्षा का उद्देश्य बनाने पर अत्यधिक बल दिया है। वे शिक्षा के द्वारा मानवीय गुणों जैसे- सत्य, अहिंसा, करुणा, दया, त्याग, परोपकार, ईमानदारी, मैत्री, परिश्रम, सहयोग आदि के विकास को भी आवश्यक मानते हैं।

गिजु भाई ने शिक्षा का ताना-बाना बालकों को केन्द्र में रखकर ही किया है। उनके अनुसार पाठ्यक्रम परीक्षा केंद्रित न होकर अनुभवजन्य होना चाहिए। वे मानते हैं कि बालकों के लिए उचित-अनुचित, धर्म-अधर्म, उन्हें क्या पढ़ना चाहिए और क्या नहीं पढ़ना चाहिए, इसका निर्णय स्वयं लेने के बजाय बालको पर छोड़ देना चाहिए। बालक स्वयं ही शिक्षित होगा, बस उसे उचित वातावरण एवं साधन उपलब्ध कराया जाए। अनुभवजन्य पाठ्यक्रम के समर्थक होने के कारण वे बच्चों को अपने वातावरण से भाषा सीखने, संगीत एवं नृत्य सीखने, वस्तुओं के चित्र बनाने पर बल देते थे और इस स्तर पर आने वाले गणित को सीखने पर बल देते थे। वह ऐसे पाठ्यक्रम के समर्थक थे जिससे बच्चे गिजु भाई सीख सके। शिक्षक इसमें उन्हें स्वयं सीखने में केवल एक मार्गदर्शक का कार्य करें।

गिजु भाई ने शिक्षक एवं पुस्तक प्रधान शिक्षण विधियों का विरोध करते हुए मॉन्टेसरी एवं किंडरगार्टन प्रणाली को भारतीय अनुकूलन के साथ प्रयोग किया। इन्होंने स्वतन्त्रता, प्रेम पूर्ण व्यवहार, खेल विधि, इन्द्रिय प्रशिक्षण एवं स्वयं करके स्वयं सीखने की विधि को अपनाया। शारीरिक विकास एवं इन्द्रिय प्रशिक्षण के लिए बच्चों को खुले मैदानों में खेलने-कूदने के अवसर देने को आवश्यक बताया। उनके अनुसार बच्चों को स्वयं हाथ-मुँह धोने, कपड़े पहनने, जूते पर पॉलिश करने, खाना परोसने, बर्तन साफ करने, कमरों एवं फर्नीचर आज की सफाई करने देने की बात कही, जिससे उनकी ज्ञानेन्द्रियाँ मजबूत हों। ये ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण के लिए मॉन्टेसरी द्वारा विकसित उपकरणों के प्रयोग करने को कहते हैं। इन उपकरणों की अनुपस्थिति में बालकों को पर्यावरण का अवलोकन करने, ध्वनि सुनने, गन्ध सूंघने, स्वादिष्ट एवं गैर-हानिकारक वस्तुओं का चखने, गैर-हानिकारक वस्तुओं का स्पर्श करने के स्वतन्त्र अवसर देने को कहा। गिजु भाई ने मौखिक भाषा की शिक्षा देने के बाद अक्षर ज्ञान कराने एवं पढ़ना-लिखना सिखाए जाने की बात कही है। ये कविता शिक्षण में अर्थ एवं व्याख्या पर जोर न देकर वह रसात्मकता पर जोर देने की बात करते हैं। ये बच्चों को व्याकरण की शिक्षा अलग से न देकर व्यावहारिक रूप से अध्याय के साथ दिए जाने एवं खेल-खेल में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि को सिखाने की बात करते हैं। इन्होंने गणित सीखने के लिए मॉन्टेसरी विधि के उपकरणों के माध्यम से बच्चों को जोड़ने-घटाने आदि क्रियाओं के अवसर प्रदान करने की हिमायत की है। गिजु भाई बच्चों को संगीत की शिक्षा जबरन देने की बजाय उन्हें नाचने-गाने के स्वतंत्र अवसर देने, पसंद के बाल गीत गाने, डांडिया रास करने एवं सहगान से संगीत की लय और ताल का अभ्यास करने का पुरजोर समर्थन किया है। इतिहास शिक्षण के लिए कहानी का प्रयोग करने एवं भूगोल शिक्षण के लिए प्रकृति निरीक्षण करने का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ ग्लोब और नक्शों का प्रयोग करने का समर्थन किया, जिससे शिक्षा को आनन्दपूर्ण बनाया जा सके। ये चित्रकला को सृजनात्मक शक्ति के विकास का एक उत्तम

साधन मानते हैं। इन्होंने चित्रकला प्रशिक्षण के लिए बच्चों को अपने इर्द-गिर्द की सामान्य एवं सरल ढंग से चित्रित होने वाली वस्तुओं के चित्र बनाने, अवलोकनों द्वारा रंग भरने एवं रंगों का चयन स्वयं करने की वकालत की है। इन्होंने बच्चों में धार्मिकता एवं नैतिकता का स्वाभाविक ढंग से विकास करने के लिए स्कूल में प्रार्थना करने, धार्मिक नेताओं के प्रेरक प्रसंग सुनाने एवं शिक्षकों को धर्म सम्मत नैतिक आचरण करने की सलाह दी है।

गिजु भाई की अनुशासन सम्बन्धी अवधारणा उनके अपने बाल जीवन के अनुभव, आस-पास के प्रत्यक्ष अनुभव तथा विद्यालय के अनुभव से विकसित हुई है। वे भय व दमन पर आधारित अनुशासन के साथ ही साथ लालच, प्रशंसा, पुरस्कार पर आधारित अनुशासन का भी विरोध करते थे। उनके अनुसार समाज में जो जेलें हैं उसके लिए हमारे विद्यालय की दोषपूर्ण प्रक्रिया व व्यवस्था उत्तरदायी है। उनके अनुसार जैसे शारीरिक रोगों के लिए जगह-जगह पर दवाखाने खुल गए हैं, इसी तरह से मस्तिष्क व मन रोगों के लिए जगह-जगह जेलें खुल गई हैं। अगर मन मस्तिष्क के रोगों को मिटाने का काम भी विद्यालय अपने हाथ में ले ले तो थोड़े ही समय में सब जेलें बंद हो जाएंगी। ये शिक्षकों को किसी भी स्थिति में बच्चों को झिड़कने, डांटने-पीटने का निषेध करते हैं। यह बच्चों को स्वतन्त्रतापूर्वक अभिव्यक्त करने एवं कार्य करने का अवसर देने की बात करते हैं, जिससे उनमें स्वानुशासन का विकास हो।

गिजु भाई के अनुसार शिक्षण व्यवसाय विश्व के सभी व्यवसायों में श्रेष्ठ है। इन्होंने शिशुकाल को विकास के सभी आयामों का नींव काल बताया है। इनके अनुसार यदि नींव मजबूत नहीं हुई तो इमारत भी मजबूत नहीं होगी। इसलिए ये शिक्षकों से अपेक्षाकृत अधिक अपेक्षा करते हैं। शिशु शिक्षक अपने कर्तव्यों का निर्वहन तभी अच्छी तरह से कर सकते हैं, जब उन्हें शिशु प्रकृति का ज्ञान हो, शिशुओं के प्रति उनके हृदय में प्रेम हो, शिशु शिक्षण विधियों से परिचित हों तथा उनके मन में प्रेम, स्नेह, त्याग, परोपकार तथा कर्तव्य परायणता की भावना कूट-कूट कर भरी हो। मॉन्टेसरी शिक्षकों को जहाँ माँ के रूप में देखना चाहती हैं, फ्रोबेल माली के रूप में देखना चाहते हैं, वहीं गिजु भाई शिक्षकों को पुजारी के रूप में देखना चाहते हैं। इन्होंने नारा दिया है कि बच्चों को देवता समझो, विद्या मन्दिर में उनकी सेवा पुजारी की भाँति करो। उनके अनुसार शिक्षक बॉस या अफसर को खुश करने वाला न होकर बालकों को खुश करने वाला होना चाहिए।

गिजु भाई ने शिशु शिक्षा को बाल केन्द्रित बनाने पर जोर दिया है। ये शिशुओं के रुचि, रुझान एवं आवश्यकता पर आधारित शिक्षा प्रदान करने के हिमायती हैं। उनके अनुसार बच्चों की अपनी दुनिया होती है, वह स्वतन्त्र रहना चाहते हैं, खेलना-कूदना चाहते हैं, लकड़ी के डण्डे से घोड़ा बनकर दौड़ना चाहते हैं, नाचना चाहते हैं, कहानी सुनना और सुनाना चाहते हैं, इसलिए उन्हें इन सबके अवसर प्रदान करने चाहिए। इन्होंने शिक्षकों को उपदेश दिया- ‘बच्चों के व्यक्तित्व का आदर करो, उनसे प्रेम करो, उन्हें देवता मानो, उनकी सेवा करो और उनके साथ इतना अच्छा व्यवहार करो कि वह मुस्कुराते हुए विद्यालय आए और मुस्कुराते हुए विद्यालय से जाएँ। उन्होंने बाल मन्दिर को एक मन्दिर माना तथा बालकों को उस मन्दिर का देवता।’ गिजु भाई का नारा था- ‘बाल देवो भव’। गिजु भाई ने बाल मन्दिर के वातावरण में प्रेम का रस घोल दिया था। वे बच्चों के प्रत्येक कार्य में साथ रहते, चाहे वह गाना गाना हो या रास रचना हो, खेल-खेलना हो या पढ़ना-लिखना हो, कविता का पाठ करना हो या बगिया सजाना हो, पेड़-पौधे लगाना हो या टहलना हो या प्रकृति दर्शन करना हो, इत्यादि कार्यों में गिजु भाई उनके साथ-साथ रहते, दिखाते, बताते तथा बच्चों को प्रेम से काम में लगाते। गिजु भाई के इस गुण की वजह से बच्चे उन्हें

‘मूछों वाली माँ’ के रूप में मानते, प्रेम करते तथा सम्मान देते थे। वह कहते हैं कि नागों, प्रेतों, पत्थरों, मानवों की पूजा का युग बीत चुका है, अब बालकों की पूजा का युग आ गया है। गिजु भाई द्वारा शिशु एवं बच्चों हेतु किए गए बहु-पक्षियों कार्यों की वजह से उनको ‘बालकों के गाँधी’ के नाम से जाना जाता है।

गिजु भाई ने अपने बचपन के समय के विद्यालयों को बाल कसाई खाना कहा है और उद्घोष किया कि घोड़े के अस्तबल जैसे धूल भरी शालाओं और मारपीट एवं डर दिखाने वाले इन बाल कतलखानों को बारूद से उड़ा देना चाहिए। इन्होंने शिशु विद्यालय को बाल मन्दिर की संज्ञा दी, जहाँ पर शिक्षक पुजारी हों और बालक देवता। इन्होंने विद्यालयों को मन्दिर जैसा सजाने, संवराने, उन्हें आकर्षण का केंद्र बनाने, बच्चों के व्यक्तित्व का आदर करने, उनसे प्रेम करने, उनकी सेवा करने और उन्हें अपने विकास के स्वतन्त्र अवसर देने की वकालत की। इनका कहना था कि बच्चों को किसी भी स्थिति में ताड़ना न दो, विद्यालय का वातावरण भय मुक्त बनाओ। विद्यालय का वातावरण ऐसा हो कि बच्चे हँसते हुए विद्यालय में प्रवेश करें और बिना किसी थकान एवं परेशानी के खुशी-खुशी विद्यालय से घर जाएँ।

परिवार बच्चों की प्रथम पाठशाला होती है। गिजु भाई के अनुसार अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को स्कूल में प्रवेश करा देने और उनके लिए अध्ययन सामग्री एवं सुविधा उपलब्ध करा देने मात्र से उनके कार्यों की इतिश्री नहीं हो जाती, बल्कि उन्हें शिक्षकों के पूरक के रूप में भी कार्य करना चाहिए। उनके अनुसार अभिभावकों का कर्तव्य है कि वह धर्म एवं नैतिकता का पालन करें, अपने बच्चों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करें, बच्चों को परिवार में स्वतन्त्र अभिव्यक्ति एवं कार्य करने के अवसर दें, उनके अच्छे कार्यों के लिए प्रशंसा करें और उनकी सृजनशीलता के विकास में सहायक बनें।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता-

गिजु भाई भारत के ऐसे शिक्षाविद हैं जिनका अध्ययन केन्द्र बाल केन्द्रित शिक्षा, बाल शिक्षण पद्धति एवं बाल मनोविज्ञान से सम्बन्धित रहा है। इन्होंने बाल शिक्षा के विभिन्न घटकों के सन्दर्भ में अमूल्य विचार दिये हैं। वास्तविक शिक्षा को इन्होंने सर्वांगीण विकास का साधन बताया है। वर्तमान में विभिन्न शिक्षा शास्त्री शिक्षा के इसी अर्थ को स्वीकार कर रहे हैं।

शिक्षा को मनुष्य का सर्वांगीण विकास का साधन मानने वाले गिजुभाई बच्चों के शारीरिक, मानसिक विकास, सृजनात्मक का विकास, धार्मिक एवं नैतिक विकास को शिक्षा का उद्देश्य बताया है जिन्हें आज भी शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्य माना जाता है।

गिजु भाई ने पाठ्यक्रम को पुस्तक एवं परीक्षा प्रधान के स्थान पर अनुभवजन्य बनाया है। इन्होंने बालकों के सम्पूर्ण वातावरण को उनके पाठ्यक्रम का अंग बनाया और उन्हें वही सीखने में सहायता की जो उनके वातावरण में था। वर्तमान में बालकों के शिक्षा के पाठ्यक्रमों को करके सीखना एवं अनुभव द्वारा सीखने पर आधारित बनाए जा रहे हैं।

गिजु भाई ने अपनी शिक्षण विधियों में शारीरिक विकास एवं इन्द्रिय प्रशिक्षण पर बल दिया है। गणित सीखने के लिए विभिन्न उपकरणों की हिमायत की है। इतिहास शिक्षण के लिए कहानी विधि का प्रयोग करने एवं भूगोल शिक्षण के लिए प्रकृति निरीक्षण सम्बन्धी विचार आज के समय में भी शिक्षण विधि के रूप में प्रयोग किया जा रहे हैं। इन्होंने मॉन्टेसरी और किंडर गार्टन विधियों का समर्थन तो किया

किन्तु उनका अन्धानुकरण न करके उनका भारतीय परिवेश के अनुसार अनुकूलन किया है। आज के शिक्षाविदों को भी गिजु भाई से सीखना चाहिए।

गिजु भाई की अनुशासन के सम्बन्ध में बच्चों को बिल्कुल न डांटने-पीटने की बात तो सही है किन्तु उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता देने का नारा अक्षरशः सही नहीं है। क्योंकि मनुष्य, मनुष्य है वह जन्म से न तो देवताओं की तरह शुद्ध है और न पशुओं की तरह विमूढ़। बच्चों को पूर्ण स्वतंत्रता देने के स्थान पर थोड़ा अंकुश लगाना जरूरी है।

गिजु भाई के अनुसार शिक्षकों को शिशु प्रकृति का ज्ञान होना चाहिए, उनके प्रति प्रेम होना चाहिए, शिशु शिक्षण विधियों से परिचित होने के साथ-साथ कर्तव्यपरायणता की भावना कूट-कूट भरी होनी चाहिए। वर्तमान में भी शिक्षकों को बाल मनोविज्ञान का ज्ञान, शिक्षण विधियों का ज्ञान अति आवश्यक है। गिजु भाई की तरह सभी शिक्षक समर्पित नहीं हो सकते, किन्तु अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें, इतना ही पर्याप्त है।

गिजु भाई का बाल शिक्षा को बाल केन्द्रित करने का विचार उत्तम है, किन्तु बच्चों को देवता और शिक्षकों को पुजारी के रूप में प्रतिष्ठित करना थोड़ी सी अतिशयोक्ति हो जाती है। बच्चों के साथ प्रेम और स्नेहपूर्ण व्यवहार करना अति आवश्यक है, उन्हें डर का वातावरण भी नहीं देना चाहिए किन्तु आवश्यकता पड़ने पर उन पर नियन्त्रण करना भी आवश्यक है।

विद्यालय के वातावरण को भय मुक्त बनाने एवं विद्यालय को सुन्दर बनाने की उनकी संकल्पना कि विद्यालय देखने में सुन्दर हो, वातावरण सुन्दर हो, हर वस्तु सुन्दर हो, बाल-बगीचा सुन्दर हो, शिक्षकों का व्यवहार सुन्दर हो, ऐसे पूर्ण सुन्दरता के हिमायती गिजु भाई के ये विचार आज भी प्रासंगिक है।

गिजु भाई द्वारा अभिभावकों को दिए निर्देश कि वह शिक्षक के पूरक का कार्य करें, धर्म एवं नैतिकता का पालन करें, बच्चों से प्रेमपूर्ण व्यवहार करें, परिवार में उन्हें स्वतन्त्र अभिव्यक्ति एवं कार्य करने की आजादी दें, की आज महती आवश्यकता है।

निष्कर्ष-

गिजु भाई अपने ऐश्वर्यपूर्ण वकालत का पेशा छोड़कर तपस्या पूर्ण शिक्षक का पेशा स्वीकार किया और इसे भी एक पेशा न मानकर बाल सेवा के रूप में स्वीकार किया। मॉन्टेसरी और किंडर गार्डन प्रणालियों को भारतीय प्रवेश में अनुकूलन करके भारतीय जामा पहनाना उनके दूरगामी सोच का ही परिणाम है। गिजु भाई ने सीखने के क्षेत्र में स्वतन्त्रता पर जोर दिया। उन्होंने शिक्षा के पारम्परिक तरीकों की आलोचना की। उन्होंने शिक्षा की ऐसी प्रणाली को अस्वीकार कर दिया जो बच्चों को विशेष रूप से प्रारम्भिक वर्षों में 'स्वतन्त्र' और 'प्राकृतिक' वातावरण में सीखने की स्वतन्त्रता नहीं देती। वे मॉन्टेसरी शिक्षा प्रणाली से प्रभावित हुए और उन्होंने ज्ञान संचार के वैकल्पिक तरीकों के साथ प्रयोग करने का साहसिक कदम उठाया। गिजु भाई की शिक्षा का सम्प्रत्यय एवं उद्देश्य सर्वांगीण विकास होना, पाठ्यक्रम का परीक्षा प्रधान की जगह अनुभवजन्य होना, शिक्षण विधि खेल विधि एवं इन्द्रिय प्रशिक्षण पर आधारित करना, स्वतन्त्रता पर आधारित स्वनुशासन होना, शिक्षक से शिशु प्रकृति का ज्ञान एवं प्रेमपूर्ण व्यवहार की आशा करना, बालक के व्यक्तित्व को महत्त्व देना एवं उसके रुचि रुझान के अनुसार शिक्षा प्रदान करना, विद्यालय का सुन्दर एवं भय मुक्त वातावरण की संकल्पना करना, अभिभावकों से प्रेमपूर्ण व्यवहार एवं स्वतन्त्र अभिव्यक्ति का अवसर देने की बात करना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समीचीन ही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की अवस्था से पूर्व ही हो जाता है। इसलिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ईसीसीई) में मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, बहु-स्तरीय खेल आधारित, गतिविधि आधारित और खोज आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है। जैसे अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेन्टिंग, अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए इसके साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना, आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है। गिजु भाई के बाल शिक्षा सम्बन्धी विचार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक है।

सन्दर्भ-

1. लाल, रमन बिहारी एवं पलोड़, सुनीता (2007). शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. पाण्डेय, राम शकल (2007), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. त्यागी, गुरसरनदास एवं नन्द, विजय कुमार (2002), उदीयमान भारत में शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
4. <https://www.arvindguptatoys.com/arvindgupta/divaswapna-hindi.pdf>
5. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_O.pdf
6. <https://www.gijubhaibadheka.in/pdf/books-by-others-on-gijubhai/PhD-thesis-Giju-Bhai-hindi.pdf>
7. <https://www.ijirmf.com/wp-content/uploads/201705058.pdf>
8. <https://www.jetir.org/papers/JETIR2103125.pdf>
9. <https://www.setumag.com/2020/10/Ramesh-Kumar-Giju-Bhai.html>
10. <http://hdl.handle.net/10603/389490>

